'सूर्यपथ से', का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना

डॉ. श्रीमती रीना भट्टाचार्य

12-B/114, स्वयंवित्त पोषित योजना, आवास विकास कॉलौनी सिकन्दरा, आगरा

रचनाकार सदैव ही पीड़ित मानवता की वेदना को मुखरित करता रहा है। सच्चा साहित्यकार अपने युग की परिस्थितियों को अपनी कलम की पैनी धार से समय-शिला पर अमिट अंकन करता है। युगीन परिस्थितियों का सच्चा लेखा-जोखा कवि की लेखनी से प्रस्तुत होता है। आजादी की लड़ाई को कवियों साहित्यकारों ने अपनी ओजस्वी वाणी के द्वारा लड़ा। उन्होंने गीतों कविताओं की अखण्ड ओजस्विनी शक्ति द्वारा जन-जन में चेतना का संचार किया सोये हुये नरसिंहों को जगाने का कार्य किया। रणक्षेत्र में हुंकार वरपाती हुई प्रबल कालिका शक्ति को समुपस्थित किया।

आज भी कविता युगानुरूप स्वयं को ढालती हुई विविध रूपों में हमारे सामने आ रही हैं भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय, असमानता के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करती हुई कविता आज भी समाज, देश को दिशा दे रही है।

डॉ. राजकुमार रंजन कृत 'सूर्यपथ से' की कविताएं, गीत राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत है कुल 61 गीतों कविताओं का यह संकलन राष्ट्रीय जीवन और उनके सरोकारों से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। राष्ट्रीय जीवन के विविध पक्षों पर लिखी गई कविताएं जीवन के कुहासों से निजात दिलाती हैं, निराशा के भावों की मिटाती हुई ये कविताएं आशा का संचार कर हृदय में नवीन आह्लाद और चेतनता प्रदान करती हैं। कवि का यह पाँचवा काव्य संकलन है। कवि के बारे में सूर्य पथ से के अनुशीलन में शीलेन्द्र वशिष्ठ द्वारा यह कहा गया है कि डॉ. रंजन एक बहु आयामी चिन्तन सम्पन्न साहित्यकार हैं क्योंकि काव्य-सृजन के अतिरिक्त यात्रावृत्तान्त, समीक्षाएं, लेख, निबन्ध, शोध निबन्ध तथा योग साहित्य पर लेखनी चलाई है।

कवि ने माँ शारदे को वंदन करते हुए उनसे आशीर्वाद माँगा है कि वे लोगों के राग-द्वेष का हरण कर प्रेम-पथ पर ले जायें। लोगों की आसुरी वृत्तियाँ नष्ट हों, जिससे समाज प्रगति पथ पर अग्रसर हो सके।

पृष्ठ 4-5-6 पर लिखी गई हिन्दी महिमा रचना हिन्दी भाषा की समृद्धि को उजागर करती हैं।

"दिनकर की हुंकारें इसमें भूषण की ललकारें,
बच्चन की 'मधुशाला' इसमें नीरज की झंकारें
पंत, प्रसाद, निराला, महादेवी की सुमधुर तानें
प्रिय प्रवास हरिऔध लिखगए विद्यापति के गाने
हिंदी भाल-चन्द्रिका हिन्दी दीप की शिखा
हिंदी से अपनी सम्मानित भारत माता प्यारी।"

ज्योति पर्व दीपावली के माध्यम से कवि समाज में यह सन्देश देना चाहता है कि दीप केवल ऊपरी अंधकार को ही न हरते बल्कि अंदर की कालिमा भी नष्ट करते हैं—

"साँसें हों चंदनी समीरण
आँखों में पवित्र गंगाजल
मन के भाव अमृत बरसाकर
धो दे सबके मन का काजल
सृजन-दीप तन-मन में विकसें
घर-घर में फैले उजियाली।"

कवि-लेखनी राष्ट्रीय समस्याओं पर चली है पर्यावरण प्रदूषण केवल राष्ट्रीय समस्या ही नहीं वरन् अंतर्राष्ट्रीय समस्या बन चुकी है कवि जनता को जाग्रत करते हुये एक नये युद्ध की आह्वान करता है जिससे परिवेश तथा अर्न्तमन शुद्ध रहें—

कोलाहल दूर रहे
हलचल भरपूर रहे
अति विनम्र भाषा हो
शांति की पताका हो
शोल बहुल यंत्रों से
प्रकृति को न क्रुद्ध करें
एक नया युद्ध करें
पर्यावरण शुद्ध करें।

'सर्जक सुमन' 'सूर्यपथ से की प्रतिनिधि रचना कही जा सकती है। पुष्प के माध्यम से मानवीय गुणों को उजागर करते हुए शाश्वत मूल्यों की धरोहर के रूप में देश की सांस्कृतिक तथा बहुआयामी चेतना का संदर्शन इस गीत की विशेषता है।'

हम सुमन सर्जना वाले हैं श्रम के काँटे रखवाले हैं।
गन्धायित होते वन उपवन, हम जीवन देने वाले हैं॥

सामाजिक समरसता एकता और अखंडता पर लिखी गई रचनाओं में 'हम है भाई-भाई' रचना संकलन की अमूल्य निधि है। राष्ट्रीय एकता का दिग्दर्शन कराने में नई उमंगें, नई तरंगें, 'एक रहेंगे हम' मंगल दल हुंकार उठा, वीर सावरकर का बलिदान, चल जवान देश के, हम भारत के लाल, यह भारत देश हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है, रचनाएं सफल एवं उत्कृष्ट बन पड़ी हैं।

देश की आजादी में विशिष्ट भूमिका निभाने वाले क्रान्तिकारियों बलिदानियों को समर्पित गीतों में शत्-शत् नमन करूँ, इतिहास नया लिख जाते हैं, रणवीरों को प्रणाम उल्लेखनीय हैं—

"मिट गये करोड़ों दीवाने परवाने ज्यों मिट जाते हैं।
आजादी की खातिर मर कर इतिहास नया लिख जाते हैं।"

आजादी के बाद 60 सालों में राष्ट्रीय परिदृश्य में महान परिवर्तन हुये हैं। सड़ी-गली मान्यताओं को तिलांजलि देने से ही नई बुंलदियों का वरण संभव है, ऐसी परिस्थिति में पुराने श्रेष्ठ मूल्यों को अपनाते हुए नई मूल्यवान संभावनाओं की भी तलाश अवश्यंभावी है 'शर पुराने से नहीं अब काम चलता' रचना का यही अभिप्रेत है।

रचनाकार की जाग्रतावस्था का आकलन तभी संभव है, जब वह सम्प्रति हो रहे परिवर्तनों एवं अच्छे-बुरे पर दृष्टि रखे। श्री रंजन की दृष्टि हिन्दुस्तान और हिन्दुसतानियों के उन कर्मों पर भी गई है जहाँ वह अपने स्वार्थवश मंदिर और मस्जिद की दीवारें खड़ी करता है। धर्म, सम्प्रदाय, जातियों में बँटकर वह देश के प्रति शाश्वत धर्म को विस्मृत कर देता है—

हम मंदिर-मस्जिद की हद से बाहर निकल न पाये।
हमने अपने ही पूजागृह अपने हाथ गिराये॥
कहाँ गये कबिरा के ताने देश प्रेम के गान कहाँ?
मेरे साथी, तुम्हीं बताओ ! अपना हिन्दुस्तान कहाँ?

कभी-कभी निराशा के बादल उमड़-घुमड़ कर मन में अन्धकार का प्रादुर्भाव करते हैं एक क्षण को ऐसा लगता है कि तमस् जीत रहा है प्रकाश हार रहा है लेकिन कवि-मन हार नहीं मानता 'सब के सब बहरे हैं' कविता आधुनिक राजनैतिक नैतिक ह्रास की ओर इंगित करती है।

'संघर्ष ही जीवन है' इस कहावत को पृष्ठ 42 पर लिखी गई कविता 'बलिदानों का क्या होगा' चरितार्थ करती है संघर्षशीलता अरमानों को कभी टूटने नहीं देती। बलिदानों की प्रखर ज्वाला ही जन-जन में चेतना और जीवन में जीत सुनिश्चित करती हैं। जयगान उन्हीं का होता है, जो घबराकर पराजित नहीं होते। सम्मान भी उन्हीं का होता है जो अपमनों को गले नहीं लगाते, वे ही महापुरुष बनते हैं, जो इन्सानियत को तिलांजलि नहीं देते उपरोक्त गीत इन्हीं भावों से ओतप्रोत हैं।

"तूफानों से घबराये फिर बलिदानों का क्या होगा।
दृढ़ता से यदि अड़े नहीं तो चट्टानों का क्या होगा॥"

देश के विभिन्न भागों में हो रही विध्वंसक गतिविधियों के प्रति भी कवि चिंतित जान पड़ता है कश्मीर समस्या असम आदि की समस्याएं देश को बाँट रही है इसके पीछे राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमी मुख्य कारण है—

मेरे देश की जवानी जागरी ! फिर हिन्दुस्तान बँटने लगा
शंकाए पनपने लगीं तुमसे विश्वास हटने लगा।

'हम बाण लिखे आते हैं', रचना का विश्वास इन समस्याओं के निराकरण में निहित है। जागरण का आह्वान करते हुये कवि कह उठता है—

आज समय के परिवर्तन से जाग-जाग ! भारत ओ भारत।
तेरे दो कंधों पर युग के निर्माणों का भार पड़ा है॥
जाग-जाग ! ओ भरत राष्ट्र ! तेरी धरती हुंकार रही है।
केवल तेरे जागृति पल को तेरी ओर निहार रही है॥

'भारत मुकुट' रचना काश्मीर की पावन माटी के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करती है। नूतन उपमानों तथा भाषा सौष्ठव का दिग्दर्शन इस रचना में दृष्टव्य है—

पेड़ों की कोयले नया शुभ्रांचल होती
वायु जहाँ गगनांगन में गन्धायित होती
सूर्य जहाँ अपनी किरणों से दीप्ति जगाता
सोये सुमनों में फिर से जागरण कराता।

युवकों का आह्वान करते हुये कवि ने युद्ध का घोष करो रे ! रचना का निर्माण किया है इस रचना के भाषा सौष्ठव, भाव संवेदना तथा प्रचंड आक्रोश रामधारी दिनकर की कविताओं का बरवश स्मरण कराता है।

इसी क्रम में कवि चाहता है कि भारत का गरीब, किसान, मजदूर, जवान स्वयं की आतंरिक शक्ति को पहचानें अपने प्रति हो रहे अन्याय, शोषण के प्रति जागरूक हो कर भारत के प्रगति की मुख्य धारा में आयें। निम्नवत कविता का यही उद्देश्य है।

जागो वीर बाँकुरो ! जागो; जागो वीर जवान रे !
जागो ओ मजदूर खेत के, ओ हलधरे किसाने रे !

कवि का संघर्ष निरंतर चलता रहता है उसे जीवन में हार स्वीकार नहीं है संघर्ष की तीव्र धार ही विजय श्री का वरण करने को उद्यत करती है।

शंकाओं का हरण करेंगे मन पर भार नहीं स्वीकार।
विजय श्री का वरण करेंगे हमकों हार नहीं स्वीकार !!

अंधेरे में रह कर भी उजाले के गीत गाने का आह्वान कुहासे को चीर कर नये प्रभात का दिग्दर्शन कराने का संदेश देता हुआ यह गीत निश्चित रूप से प्रेरक है—

इस रैन बसेरे में रह कर क्या चिड़िया गीत सुनायेगी
जब भोर करेगा अभिनंदन तब तक चिड़िया उड़ जायेगी
इसलिये अंधेरे में रह कर तू गीत उजाले के गाना
इस दुनिया में आकर यारो ! किससे किसका है याराना।

दीप की लौ, सूर्य की रोशनी को निकाले रहो, तू मुस्कराता चल आदि गीतिकाएँ अंर्तजागरण का कार्य करती है।

'सूर्यपथ से', का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है राष्ट्रीय जन जागरण, युवकों, किसान, मजदूरों को सोयी हुई चेतना अन्याय शोषण के प्रति आवाज बुलन्द करने का आह्वान कुहासे से निकल कर रोशनी में आने का संकल्प इस काव्य संकलन के मूल स्वर हैं ।

भाषा, संवेदना, शिल्प, काव्य लक्षणों के निकट होते हुये भी 'सूर्य पथ से', की रचनाएं सरल, सुस्पष्ट, हृदयग्राही एवम् रसानुभूति कराने वाली हैं यही नहीं वे प्रखर आशावाद, अवसाद के क्षणों से निकाल कर ओजस की ओर भी ले जाने में सक्षम हैं।